घमण्डी कौआ

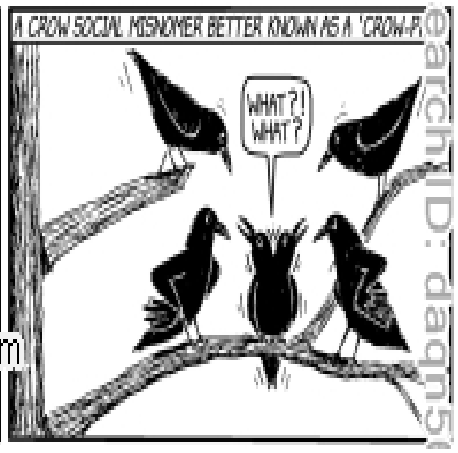

एक कौआ था । वह अपने ही जैसे दूसरे काले कौओं के साथ रहता था । एक दिन उसे कहीं से कुछ मोर के पंख मिल गये । उसने उन्हें अपनी पूँछ में लगा लिया ।

फिर उसने मन–ही मन कहा, "मैं कितना सुन्दर दिखायी देता हूँ । अब मैं सुन्दर–सुन्दर मोरों के साथ रह सकता हूँ । मैं इन काले–कलूटे कौओं के साथ क्यों रहूँ ?

अतः उसने अपने मित्रों का साथ छोड़ दिया और मोरों के साथ रहने लगा । परन्तु उसे काले–कलूटे कौवे को अपने बीच आया देखकर मोरों को बहुत क्रोध आया ।

उन्होंने चिल्लाकर कहा, "तुमने हमारे पंख लगाने का साहस कैसे किया ? अरे घमण्डी कौए, दूर हो जाओ । हम तुम्हें अपने साथ नहीं रखना चाहते ।"

इस प्रकार कौआ भागकर फिर अपने मित्रों–कौओं के पास आ गया । परन्तु वे भी उससे बहुत नाराज थे ।

वे एक साथ मिलकर चिल्लाये, "दूर हो जाओ । अब तुम जाकर उन्हीं मोरों के बीच रहो । हम तुम्हें अपने साथ नहीं रहने देना चाहते ।"

इस प्रकार वह कौआ अकेला ही रह गया । उसके मित्रों ने भी उसका साथ छोड़ दिया ।

वह जो अपने मित्रों का साथ छोड़ देता है, अकेला ही रह जाता है ।

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 कौए को क्या मिला ?

.....

प्र. 2 उसने मन–ही मन क्या कहा ?

.....

प्र. 3 कौआ किनके साथ रहने लगा ?

.....

प्र. 4 मोरों ने कौए से क्या कहा ?

.....

प्र. 5 मोरों के द्वारा भगाए जाने के बाद कौए ने क्या किया ?

.....

.....

प्र. 6 फिर से अपने पास आने पर उसके साथी कौओं ने क्या किया ?

.....

.....

प्र. 7 इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

.....

प्र. 8 *योजक चिन्ह* वाले शब्द ढूँढकर लिखो ?

.....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग